गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; सितम्बर, २०१९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–१, अंक ८ □ सितम्बर, २०१९

अहिंसा मानव–जाति के हाथों में सबसे बड़ी शक्ति है।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– .....पृष्ठ

संपादकीय.....

अनुभवों की बानगी १

Understanding Nonviolence from Gandhi.....३

आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)*.....६

फाउण्डेशन की गतिविधियां..... ७–१२

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई–मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव–४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*
*(*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)*

मुखपृष्ठ छायाचित्र: महात्मा गाँधी महामहिम आगाखाँ तिसरे एवं सरोजिनी नायडू के साथ, लंडन, १ अक्तूबर १९३१; सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

गाँधी मेरा अस्तित्व

क्या आप झूठ बोलते है? क्या आप यह चाहेंगे की आपके बच्चे या परिवार के कोई सदस्य असत्य का सहारा ले? क्या आप या आपके परिवार की कोई भी व्यक्ति झघडा करना पसंद करते हैं? क्या आप देश के स्वाभिमान को ठेस पहुँचे ऐसे किसी भी कार्य से हाथ मिलायेंगे? क्या आप चाहते है दुश्मन को तैयार कर उनसे बदले की भावना रखे? अगर आप इन सभी सवालों का उत्तर 'नहीं' में दे रहे हैं तो आप उन मूल्य को अपने भीतर भी देखना चाहते है जो गाँधी ने जीवन भर आचरण करने का प्रयास किया। ऐसा कह सकते हैं क्या, गाँधीजी ने जो विचार अपने जीवन में साक्षात किए वे शाश्वत विचार आपके जीवन में साक्षात करना चाहते हैं? इसका मतलब यह है कि चाहे हम गाँधीवादी नहीं है, वैसे देखा जाये तो गाँधीजी खुद भी गाँधीवादी नहीं थे, उन्होंने ने तो कहा है कि गाँधीवाद जैसा कोई वाद में मेरा विश्वास नहीं है। या मैं मानता नहीं हूँ। जब गाँधीजी नहीं मानते तो हम क्यों माने??? हाँ, पर रही बात मूल्य और सिद्धांत के संदर्भ में अगर मेरे जीवन में मैं सत्य, अहिंसा, अभय, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण जैसे सिद्धांतों को स्थान दे रहा हूँ तो इसका मतलब यह है कि गाँधीजी और मैं कहीं न कहीं एक ही राह के पथिक है। बस, फर्क इतना ही है कि वे इस श्रृंखला में सबसे आगे है और मैं इस मार्ग की शुरूआती दौर में हूँ। इसका मतलब यह है कि जब हम दोनों एक ही राह के राही है तो मैं गाँधीजी को जिस नजरिये से देखता हूँ, या जिस शब्द से उनको संबोधित करता हूँ, वह संबोधन और वह नजरिया उस राह के सभी व्यक्तियों को लागू होता है। ताज्जुब की बात तो यह है कि उस राह में तो मैं भी हूँ! तो क्या मैं मेरे मूल्य और सिद्धांत को यानी की स्वयं को देखने के नजरिये के प्रति उँगली उठाकर मैं गाँधीजी को नहीं, बल्कि मैं स्वयं पर उँगली उठा रहा हूँ।

हम सभी भारतीय हमारे राष्ट्र को शाश्वत तत्त्वों के आधार पर निर्माण करते हैं, सत्य, अहिंसा, बंधुत्व, प्रेम, करुणा, राष्ट्र भावना इन सभी तत्त्वों पर सभी को विश्वास है, जब इन तत्त्वों के प्रति मैं विरोध करता हूँ तो यह विरोध कोई व्यक्ति का ही नहीं बल्कि मेरे अस्तित्व का भी है।

मेरा यह मार्ग मेरी पहचान बनाता
किसी को जला के कैसे शीतल बनूँ?

इन मूल्यों के आधार पर हम अपने जीवन को संवारते हैं, इस दृष्टि से हमारा जीवन एक शुद्ध अंतःकरण कि ओर आगे बढ़ता है। जब हम शाश्वत जीवन या सत् चित् आनंद की कल्पना करते हैं तब मूल्य इनके केंद्र में रहते हैं। गाँधीजी का जीवन इन्हीं आदर्शों का आईना रहा है। महान थोरो का कथन है कि किसी भी अच्छे संघर्ष में जब तक शुद्ध अंतःकरण वाला एक भी व्यक्ति होगा तब तक उस संघर्ष में पराजय हो ही नहीं सकती, उसमें विजय अवश्यंभावी है। आइए, गाँधीजी की १५०वीं जयंती वर्ष पर शाश्वत जीवन की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त कर इस विश्व को बेहतर बनाते हैं।

इस अंक में गाँधीजी की आत्मकथा से अगला प्रकरण, डॉ. भवरलाल जैन द्वारा लिखित किताब 'आज की समाज रचना' से लेख, हमारे छात्रों द्वारा अहिंसा पर लिखा हुआ लेख, फाउण्डेशन की गतिविधियां तथा 'How Gandhi Matters' सेमिनार की विशेष प्रस्तुति हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'

अनुभवों की बानगी

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। दक्षिण अफ्रीका की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण।* **– संपादक**

नेटाल के बन्दरगाह को डरबन कहते हैं और वह नेटाल बन्दर के नाम से भी पहचाना जाता है। मुझे लेने के लिए अब्दुल्ला सेठ आये थे। स्टीमर के घाट (डक) पर पहुँचने पर जब नेटाल के लोग अपने मित्रों को लेने स्टीमर पर आये, तभी मैं समझ गया कि यहाँ हिन्दुस्तानियों की अधिक इज्जत नहीं है। अब्दुल्ला सेठ को पहचाननेवाले उनके साथ जैसा बरताव करते थे, उसमें भी मुझे एक प्रकार की असभ्यता दिखायी पड़ी थी, जो मुझे व्यथित करती थी। अब्दुल्ला सेठ इस असभ्यता को सह लेते थे। वे उसके आदि बन गये थे। मुझे जो देखते वे कुछ कुतूहल की दृष्टि से देखते थे। अपनी पोशाक के कारण मैं दूसरे हिन्दुस्तानियों से कुछ अलग पड़ जाता था। मैंने उस समय 'फ्रॉक कोट' वैगेरा पहने थे और सिर पर बंगाली ढंग की पगड़ी पहनी थी।

अब्दुल्ला सेठ मुझे घर ले गये। उनके कमरे की बगल में एक कमरा था, वह उन्होंने मुझे दिया। न वे मुझे समझते, और न मैं उन्हे समझता। उन्होंने अपने भाई के दिये हुए पत्र पढ़े और वे ज्यादा घबराये। उन्हें जान पड़ा कि भाईने तो उनके घर एक सफेद हाथी ही बाँध दिया है। मेरी साहबी रहन-सहन उन्हें खर्चीली मालूम हुई। उस समय मेरे लिए कोई खास काम न था। उसका मुकदमा तो ट्रान्सवाल में चल रहा था। मुझे तुरंत वहाँ भेजकर क्या करते? इसके अलावा, इसके अलावा, मेरी होशियारी या ईमानदारी का विश्वास भी किस हद तक किया जाये? प्रिटोरिया में वे मेरे साथ रह नहीं सकते थे। प्रतिवादी प्रिटोरिया में रहता था। मुझ पर उसका अनुचित प्रभाव पड़ जाये तो क्या हो? यदि वे मुझे इस मुक्दमे का काम न सौंपे, तो दूसरे काम तो उनके कारकुन मुझ से बहुत अच्छा कर सकते थे। कारकुनों से गलती हो तो उन्हें उलाहना दिया जा सकता था, पर मैं गलती करूं तो? काम या तो मुकदमे का था या फिर मुहर्रिरका था। इसके अलावा तीसरा कोई काम न था। अतएव यदि मुकदमे का काम न सौंपा जाता, तो मुझे घर बैठे खिलाने की नौबत आती।

अब्दुल्ला सेठ बहुत कम पढ़े-लिखे थे, पर उनके पास अनुभव का ज्ञान बहुत था। उनकी बुद्धी तीव्र थी और स्वयं उन्हें इसका भान था। रोज के अभ्यास से उन्होंने सिर्फ बातचीत करने लायक अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। पर अपनी इस अंग्रेजी के द्वारा वे अपना सब काम निकाल लेते थे। वे बैंक के मैनेजरों से बातचीत करते थे, यूरोपियन व्यापारियों के साथ सौदे कर लेते थे और वकिलों को अपने मामले समझा सकते थे। हिन्दुस्तानी उनकी बहुत इज्जत करते थे। उन दिनों उनकी फर्म हिन्दुस्तानियों की फर्मों से सबसे बड़ी, अथवा बड़ी फर्मों में एक तो थी ही। अब्दुल्ला सेठ का स्वभाव वहमी था।

उन्हें इस्लाम का अभिमान था। वे तत्त्वज्ञान की चर्चा के शौकीन थे। अरबी नहीं जानते थे, फिर भी कहना होगा कि उन्हें कुरान शरीफ की और आम तौर पर इस्लाम के धार्मिक साहित्य की अच्छी जानकारी थी। दृष्टान्त तो उन्हें कण्ठाग्र ही थे। उनके सहवास से मुझे इस्लाम का काफी-व्यावहारिक ज्ञान हो गया। हम एक-दूसरे को पहचानने लगे। उसके बाद तो वे मेरे साथ खूब धर्म-चर्चा करते थे।

वे दूसरे या तीसरे दिन मुझे डरबन की अदालत दिखाने ले गये। वहाँ कुछ जान-पहचान करायी। अदालत में मुझे अपने वकील के पास बैठाया। मजिस्ट्रेट मुझे बार-बार देखता रहा। उसने मुझे पगड़ी उतारने के लिए कहा। मैंने इनकार किया और अदालत छोड़ दी।

मेरे भाग्य में यहाँ भी लड़ाई ही बदी थी।

अब्दुल्ला सेठने मुझे पगड़ी उतारने का रहस्य समझाया: मुसलमानी पोशाक पहना हुआ आदमी अपनी मुसलमानी पगड़ी पहन सकता है। पर दूसरे हिन्दुस्तानियों को अदालत में पैर रखते ही अपनी पगड़ी उतार लेनी चाहिये।

इस सूक्ष्म भेद को समझाने के लिए मुझे कुछ तथ्यों की जानकारी देनी होगी।

इन दो-तीन दिनों में ही मैंने देख लिया था कि हिन्दुस्तानी अफ्रिकन में अपने अपने गुट बनाकर बैठ गये थे। एक भाग मुसलमान व्यापारियों का था - वे अपने को 'अरब' कहते थे। दूसरा भाग हिन्दू या पारसी कारकुनों, मुनीमों या गुमाश्तों का था। हिन्दू कारकुन अधर में लटकते थे। कोई 'अरब' में मिल जाते थे। पारसी अपना परिचय परसियन ने नाम से देते थे। व्यापार के अलावा भी इन तीनों का आपस में थोड़ा बहुत सम्बन्ध अवश्य था। एक चौथा और बड़ा समुदाय तामिल, तेलुगु और उत्तर हिन्दुस्तान के गिरमिटिया तथा गिरमिट-मुक्त हिन्दुस्तानियों का था। गिरमिट का अर्थ है वह इकरार - यानी 'इग्रिमेण्ट', जिसके अनुसार उन दिनों गरीब हिन्दुस्तानी पाँच साल तक मजदूरी करने के लिए नेटाल जाते थे। गिरमिट एग्रिमेण्ट का ही अपभ्रंश है और उसी से गिरमिटिया शब्द बना है। इस वर्ग के साथ दूसरों का व्यवहार केवल काम की दृष्टि से ही रहता था। अंग्रेज इन गिरमिटवालों को 'कुली' के नाम से पहचानते थे; और चूँकि वे संख्या में अधिक थे, इसलिए दूसरे हिन्दुस्तानियों को भी 'कुली' कहते थे। कुली के बदले 'सामी' भी कहते। 'सामी' ज्यादातर तामिल नामों के अंत में लगनेवाला प्रत्यय है। 'सामी' अर्थात् स्वामी। स्वामी का मतलब तो मालिक हुआ। इसलिए जब कोई हिन्दुस्तानी सामी शब्द से चिढ़ता और उसमें कुछ हिम्मत होती, तो वह अपने को 'सामी' कहनेवाले अंग्रेज से कहता: ''तुम मुझे 'सामी' कहते हो, पर जानते हो कि 'सामी' का मतलब मालिक होती है? मैं तुम्हारा मालिक तो हूँ नहीं।'' यह सुनकर कोई अंग्रेज शरमा जाता, कोई चिढ़ कर ज्यादा गालियाँ देता और कोई-कोई मारता भी सही; क्योंकि उसकी दृष्टि से तो 'सामी' शब्द निन्दासूचक ही हो सकता था। उसका अर्थ मालिक करना तो उसे अपमानित करने के बराबर ही हो सकता था।

इसलिए मैं 'कुली बारिस्टर' कहलाया। व्यापारी 'कुली व्यापारी' कहलाते थे। कुली का मूल अर्थ मजदूर तो भुला दिया गया। मुसलमान व्यापारी यह शब्द सुनकर गुस्सा होता और कहता: ''मैं कुली नहीं हूँ। मैं तो अरब हूँ।'' कोई थोड़ा विनयशील अंग्रेज होता तो यह सुनकर माफी भी माँग लेता।

ऐसी दशा में पगड़ी पहनने का प्रश्न एक महत्त्व का प्रश्न बन गया। पगड़ी उतारने का मतलब था अपमान सहन करना। मैंने तो सोचा कि मैं हिन्दुस्तानी पगड़ी को बिदा कर दूँ और अंग्रेजी टोपी पहन लूँ, ताकि उसे उतारने में अपमान न जान पड़े और मैं झगड़े से बच जाऊँ।

पर अब्दुल्ला सेठ को यह सुझाव अच्छा न लगा। उन्होंने कहा; ''अगर आप इस वक्त यह फेरफार करेंगे। तो उससे अनर्थ होगा। तो दूसरे लोग देश की ही पगड़ी पहनना चाहेंगे, उनकी स्थिति नाजुक बन जायगी। इसके अलावा, आपको तो देशी पगड़ी ही शोभा देगी। आप अंग्रेजी टोपी पहनेंगे तो आपकी गिनती 'वेटरों' में होगी।

इन वाक्यों में दुनियावी समझदारी थी, देशाभिमान था और थोड़ी संकुचितता भी थी। दुनियावी समझदारी तो स्पष्ट ही है। देशाभिमान के बिना पगड़ी का आग्रह नहीं हो सकता; और संकुचितता के बिना 'वेटर' की टीका संभव नहीं। गिरमिटिया हिन्दुस्तानी हिन्दू, मुसलमान और ईसाई इन तीन भागों में बँटे हुए थे। जो गिरमिटिया हिन्दुस्तानी ईसाई बन गये, उनकी संतान ईसाई कहलायी। सन् १८९३ में भी ये बड़ी संख्या में थे। वे सब अंग्रेजी पोशाक ही पहनते थे। उनका एक खासा हिस्सा होटलों में नौकरी करके अपनी आजीविका चलाता था। अब्दुल्ला सेठ के वाक्यों में अंग्रेजी टोपी की जो टीका थी, वह इन्हीं लोगों को लक्ष्य में रखकर की गयी थी। इसके मूल में मान्यता यह भी कि होटल में 'वेटर' का काम करना बुरा है। आज भी यह भेद बहुतों के मन में बसा हुआ है।

कुल मिलाकर अब्दुल्ला सेठ की दलील मुझे अच्छी लगी। मैंने पगड़ी के किस्से को लेकर अपने और पगड़ी के बचाव में समाचार पत्रों के नाम एक पत्र लिखा। अखबारों में मेरी पगड़ी की खूब चर्चा हुई। 'अनवेलकम विजिटर' - अवांछित अतिथि - शीर्षक से अखबारों में मेरी चर्चा हुई, और तीन-चार दिन के अंदर ही मैं अनायास दक्षिण अफ्रिका में प्रसिद्धि पा गया। किसी ने मेरा पक्ष लिया और किसीने मेरी धृष्टता खूब निन्दा की।

मेरी पगड़ी तो लगभग अन्त तक बनी रही। कब गई सो हम अन्तिम भाग में देखेंगे।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.९५-९८, क्रमशः

●●●

अहिंसा का रास्ता

अहिंसा संसार के उन महान सिद्धांतों में से हैं जिसे दुनिया की कोई ताकत मिटा नहीं सकती। इसकी सच्चाई प्रमाणित करने के प्रयास में मेरे जैसे हजारों लोग मर जाएँ, पर अहिंसा कभी नहीं मरेगी। और, अहिंसा का सिद्धांत उस पर आस्था रखकर उसके लिए बलि हो जानेवाले व्यक्तियों द्वारा ही प्रचारित हो सकता है।

अहिंसा उच्चतम आदर्श है। यह वीरों के लिए है, कायरों के लिए कदापि नहीं। औरों की बलि से लाभ उठाना और इस भ्रम में रहना कि हम बड़े धार्मिक और अहिंसक है, केवल अपने को धोखा देना है।

आपके पास अहिंसा की तलवार हों तो दुनिया की कोई शक्ति आपको अपनी अधीनता में नहीं ले सकती। यह विजेता और विजित, दोनों का उदात्तीकरण करती है।

इस समय सारी दुनिया में हिंसा की जो लहर आई हुई है, उसका सही कारण यह है कि अभी तक वीर पुरुष की अपराजेय अहिंसा की तकनीक को पूरी तरह खोजा नहीं गया है। अहिंसक ऊर्जा का एक औंस भी कभी बेकार नहीं जाता।

मैं यह नहीं कहता कि भारत पर आक्रमण करनेवाले लुटेरों, चोरों या राष्ट्रों से निपटने के लिए हिंसा का सहारा मत लो। लेकिन इसमें अच्छी तरह कामयाब होने के लिए हमें अपने ऊपर संयम रखना सीखना चाहिए। जरा-जरा-सी बात पर पिस्तौल उठा लेना मजबूती नहीं, बल्कि कमजोरी की निशानी है। आपसी घूँसेबाजी हिंसा का नहीं, बल्कि नामर्दगी का अभ्यास है।

यद्यपि हर प्रकार की हिंसा बुरी है और सिद्धांतत: उसकी निंदा की जानी चाहिए पर अहिंसा में विश्वास रखनेवाले व्यक्ति को आक्रमक और रक्षक के बीच भेद करने की अनुमति है, बल्कि यह उसका कर्तव्य भी है। ऐसा करने के उपरांत उसे अहिंसक तरीके से रक्षक का पक्ष लेना चाहिए अर्थात् उसकी रक्षा करने में अपनी जान दे देनी चाहिए। उसके बीच में पड़ने से संभवत: द्वंद्व की स्थिति जल्दी समाप्त हो जाएगी और यह भी हो सकता है कि लडाकू पक्षों के बीच शांति स्थापित हो जाए।

मेरी अहिंसा तरह-तरह की हिंसाओं-रक्षक हिंसा और आक्रामक हिंसा-के बीच भेद मानती है। यह सही है कि दीर्घ काल में यह भेद मिट जाता है, पर आरंभिक अच्छाई फिर भी कायम रहती है। अहिंसक व्यक्ति, समय आने पर, यह जरूर कहेगा कि किसका पक्ष न्यायोचित है और किसका नहीं। इसीलिए मैंने अबीसीनियाइयों, स्पेनियों, चैकों, चीनियों और पोलैंडवासियों की सफलता की कामना की थी, हालांकि मेरी अभिलाषा थी कि इसमें से प्रत्येक को अहिंसक प्रतिरोध का आश्रय लेना चाहिए था।

यदि युद्ध स्वयं एक अनैतिक कृत्य है तो यह नैतिक समर्थन या आशीर्वाद के योग्य कैसे माना जा सकता है? मैं सभी प्रकार के युद्धों को पूरी तरह गलत मानता हूँ। लेकिन हम दो युद्धरत पक्षों के इरादों की छानबीन करें तो संभवत: यह पाएंगे कि उनमें से एक सही है और दूसरा गलत। उदाहरण के लिए, यदि अ देश ब देश पर कब्जा करना चाहता है तो स्पष्टतया यह ब देश पर अन्याय है। दोनों देश सशस्त्र संघर्ष में विश्वास नहीं करता, फिर भी ब देश, जिसका पक्ष न्यायोचित है, मेरी नैतिक सहायता और आशिर्वाद का पात्र होगा।

यदि आपमें अहिंसा के मार्ग पर चलने की बहादुरी नहीं है तो आप घूंसे का जवाब घूंसे से दे सकते हैं। लेकिन हिंसा के प्रयोग की भी एक नैतिक संहिता है। अन्यथा, हिंसा की लपटें उन्हीं को जलाकर राख कर देंगी जो उन्हें सुलगाएंगे। मुझे परवाह नहीं अगर वे सभी नष्ट हो जाएँ। पर मैं भारत की आजादी को विनष्ट होते नहीं देख सकता।

- 'महात्मा गाँधी के विचार' से साभार, पृष्ठ क्र. १३८-१३९

●●●

UNDERSTANDING NONVIOLENCE FROM GANDHI

Truth and Nonviolence are as "old as the hills", Gandhiji said. They remained for long as individual values. It was Gandhiji who employed nonviolence as a way of conducting the social, economic and political life of a nation and succeeded in bringing about an inclusive method of healing without hurting anyone. A team of students from the one-year Post Graduate Diploma course in Sustainable Rural Reconstruction at the GRF has written an article on their understanding of nonviolence, in the context of development. The following are the co-authors: Bishnu Das, Dim Suan Kim, Pranav Shendre, Gopal Gofane and Priyanka Parashar.

- Editor

Nonviolence originates from Latin word *'VIOLARE'*. It has juxtaposed two parts: *'vis'* (force) and *'fero'* (to carry).[1] The prefix 'non' connotes 'negation or absence of'. Together 'nonviolence means 'not to do something to the detriment of others.' Nonviolence in sanskrit is *Ahimsa* that comes from 'a' *(asahayog) – 'hims'* (act of causing pain to others in any form that disturbs the life of others).[2] *Ahimsa* implies disassociation from any act of injuring, hurting and killing any living creature. In short, *Ahimsa* indicates 'not returning evil for evil' or a love force rather than hate force.

Fundamental Principle

The idea of non-violence emerges from certain fundamental positions. We understand from Gandhiji, that 'Truth is the largest reality' therefore, God.[3] In the practical sense, life, being part of the larger reality, is a manifestation of the Truth.[4] Gandhi termed life as 'sat' or real, therefore, life is primary.[5] As, life is to live, life of every individual is indispensable. The other fundamental is, 'humans are social being.' We pursue life collectively through mutual support.

Non-violence

As life is the purpose of our efforts, both at the individual and collective level, one's action has to be in a manner of sustaining life for oneself and the fellows with whom one collaborates. On the contrary, one's action cannot be in a manner that, in any sense, disturbs life of any. As life is a part of the 'Truth', every action that protects and sustains life is part of the Truth. Such actions are called non-violence.[6] Abstaining from any such action that hinders others' life and engaging in such actions that enable one another in gaining life' are called non-violence.

Forms of Non-violence

As life is primary, one cannot hinder anyone from pursuing one's life by preventing or hurting her / him. One is expected to be careful not to hurt anyone knowingly, unknowingly, directly, indirectly, personally or impersonally. Such conscious behavior is called non-violence.

Killing or injuring others are some of the intense forms of violence of the direct, personal kind. Hurting may be physical (physical attack or murder), verbal (abuse, slang, speaking in a manner of confusing others' life efforts), emotional (insulting and suppressing). It can be material (damaging others' earnings, savings, life belongings (all kinds of exploitation). It can also be hurting others' prospect (like when we are 10 people for lunch and find 50 rotis on the table and the one who comes first taking 10 rotis for himself is a violence). Such excesses at the immediate circle, family for example, would be personal violence; and in the larger circle like society or nation, are indirect

Mahatma Gandhi visiting Charles Freer Andrews at Canterbury, UK, October 3, 1931. Centre: Mahadev Desai, Mirabehn and Pyarelal.

Mahatma Gandhi accepting a cheque for eighty lakh and odd rupees for the Kasturba Gandhi National Memorial Fund, October 2, 1944.

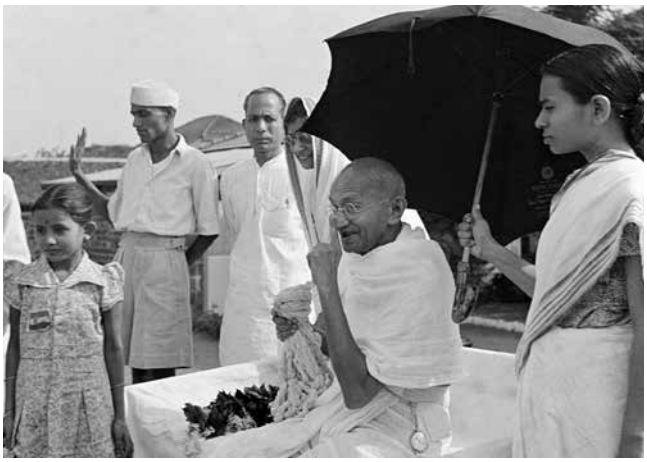

Mahatma Gandhi, after prayer meeting on his birthday at Satyagraha Ashram, Sevagram, October 2, 1944.

and impersonal violence. In that sense, exploitation, discrimination, suppression, denial in the socio, economic life of people are violence. This may happen because of convention or generally accepted system of life. In such cases violence becomes impersonal and indirect. However, the effect is the same.

Ahimsa paramo dharma

Ahimsa as negation of violence (non-hurting) is only a part of the larger understanding of truth or life. In the context of life, it is, 'practice of positive love'. For, love sustains collective living. Humans, being social, have to live interdependent. Love facilitates mutuality, enriching transactional relationship for the good of both parties. Hence 'love' is termed as the best form of ahimsa.[7] Gene Sharp, one of the best known exponents of non-violent action across the world, coined the term 'nonviolence' (without hyphen) to mean such positive emotion.

Features of nonviolence

Gandhiji called for 'knowing the truth' and then to be accordingly. Such growth in our knowledge can be possible only when we maintain harmony between our thought, word and action.

1) Understanding (the primacy of life; all are equal)
2) Adherence (tuning one's life and its actions in harmony with others)
3) Appreciation (acting in a manner of mutually beneficial life)
4) Advancing (respecting or cultivating systems that promote, protect and preserve life.)

System nonviolence

Gandhiji in his struggle for freedom, understood that, real freedom emerges as the individuals and communities realize their innate potential. As creations we are born equal, with same ability to earn life. Helping ourselves mutually to realize life is the best form of pursuing life or Truth or nonviolence living. He called it as 'swaraj'; we 'stand on our own.'

Such an empowered life has to be supported by the norms and systems which we create to support and conduct social life. In that sense, Gandhiji introduced a new lifestyle and systems that favor such lifestyle. In the

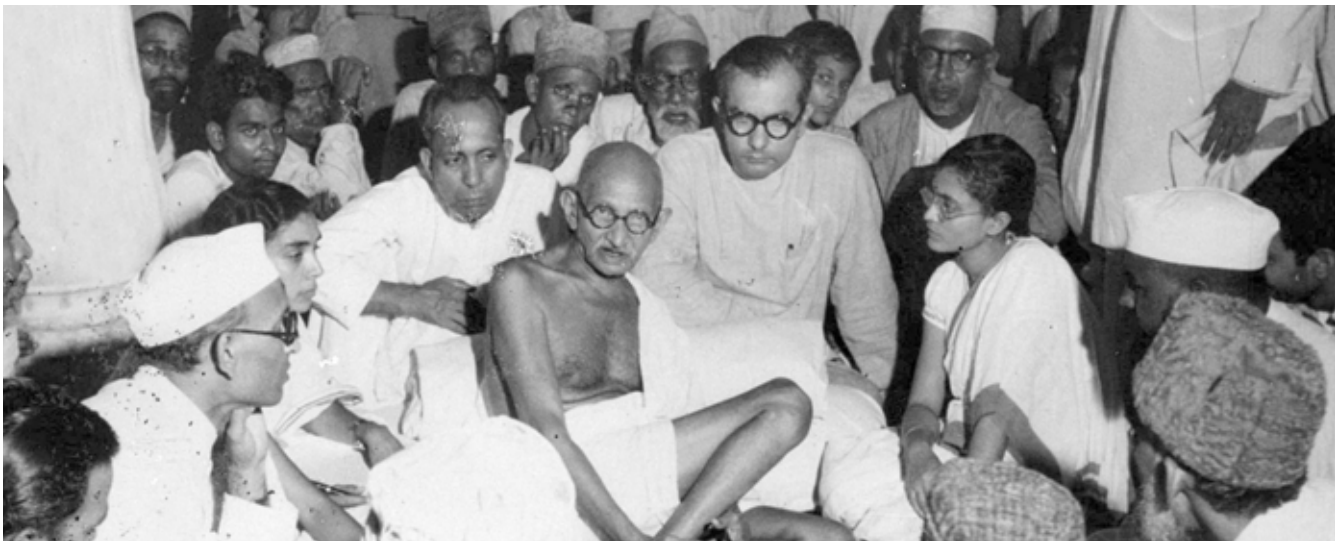

8th October 1947, India's spiritual pacifist leader Mahatma Gandhi pictured surrounded by some of his followers in new Delhi, India, shortly after his 78th birthday.

economic sense, what J C Kumarappa called 'economy of permanence'[8] with all its factors, 'decentralized economy', 'swadeshi' 'appropriate technology' (such as Charkha) are all identified as systemic nonviolence. A system that favors life of even the meanest of the members, can be termed as compassionate system or nonviolent system.

Politically too Gandhiji supported nonviolence systems. His concept of 'village republic' that favors humble citizens to rule over themselves as equals, is a compassionate arrangement.

His 'Nayee talim' is another love driven system of education that is appropriately conceived to ensure everyone gets education in a manner that they can rule over themselves, experience 'swaraj'.

All these together constitute collective nonviolence or system nonviolence.

Non-violation

As social being, the search for life is a team game. Together we play, and each individual gains life out of it. The team has a set of rules and regulations, goal and purpose. We call them 'culture' in the social sense, and 'constitution' in the political sense. We have built, in the light of this purpose, a complex system and structure. Our Education, health, transport, market, water, electricity are part of that large system as the ground to play together the game of life. Each individual is a player in the game one is a player. And everyone is expected to understand and follow the commonly accepted rule of the game. Anyone not understanding or following the rules is violating the spirit of the team and its purpose, thereby hurt the neighbours. In that sense violation is our problem. Compliance with the larger system when it is good, and improving upon the system when it is insufficient, and resisting the system when it is, knowingly or unknowingly, function against the interest of a section of the people, are all part of the principle of non-violation of the larger objective.

Mahatma Gandhi speaking into a microphone at Satyagraha Ashram, Sevagram, October 2, 1944.

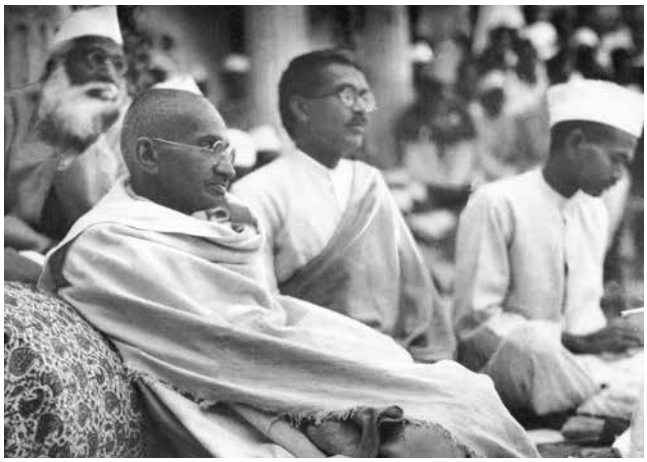
Mahatma Gandhi as Chancellor of Gujarat Vidyapith, Ahmedabad, November 28, 1926.

Preparation

In his nation building effort, Gandhiji introduced a number of methods for individuals to prepare themselves for nonviolent life. The eleven vows, ashram living, self-disciplined self-restrained life, organic living are in effect both training in and practice of nonviolence.

In a diverse nation with innumerable smaller identities together constituting the grand identity of India, Gandhiji proposed a pro-active inter-relationship. His inter-faith prayer, campaign for removal of untouchability, encouraging women to be the front runners in the freedom struggle, and the 18 elements in the constructive program are essentially a nonviolent way of nation building.

It is important that on the occasion of Gandhiji's 150th birth anniversary we recall how he wanted life to be interdependent with truth and nonviolence, so that we may live justly and equitably, especially taking into consideration the 'lowliest'.

Reference:

1) https://www.etymonline.com/word/violence.
2) https://en.wikipedia.org/wiki/Ahimsa.
3) Gandhi M.K., From Yeravda Mandir, Navjivan Mudralaya, Ahmedabad, Chapter I.
4) Young India, 06-08-1931.
5) Ibid.
6) Replying to a question asked at a meeting in Switzerland on his way back from the Round Table Conference in London, Gandhiji said "God alone is and nothing else exists, … the Sanskrit word for Truth is 'Sat', which means 'that which exists'…therefore, 'Truth is God', the only inevitable means (to find the Truth) is Love, i.e. non-violence, and since I believe that ultimately the means and end are convertible terms," (Young India, 31-12-1931).
7) Gandhi said, I should not hesitate to say that God is Love. Young India, 31-12-1931.
8) J C Kumarappa, Economy of Permanence,Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi.

- Bishnu Das, Dim Suan Kim, Pranav Shendre, Gopal Gofane, and Priyanka Parashar, Students, PG Diploma in Sustainable Rural Reconstruction, Gandhi Research Foundation, Jalgaon

प्रजातंत्र में प्राण फूंकने और उसे जीवित रखने के लिए वयस्क मतदान के अधिकार का उपयोग अधिकार के रूप में करें।

डॉ. भवरलालजी जैन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'गतिशील व प्रभावी समाज-रचना हेतु अपेक्षित परिवर्तन' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। ***- संपादक***

कृषि शिक्षा के विषय में कहना हो तो उदासीनता और आनाकानी ये दो शब्द पर्याप्त होंगे। पहले किसी समय में जीवन शिक्षण मंदिर नामक प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में कृषि शिक्षा का समावेश किया गया था। किंतु सात-आठ वर्षों के बाद उसे समाप्त कर दिया गया । उसका कारण याद नहीं है, किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि जो हुआ वह निश्चित रूप से गलत था। जिस देश में आज भी सत्तर प्रतिशत जनता किसी न किसी रूप में कृषि पर निर्भर हो, उस देश में कृषि-शिक्षा की अवहेलना करना, निश्चित रूप से अनुचित है। अत: सभी विद्याओं में कृषि विषय की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। कृषि-शिक्षा के कारण जीवन को परखने का दृष्टिकोण अधिक शुद्ध स्वस्थ और स्वाभाविक होगा।

इन सब बातों को ध्यान में रख कर इन तीन क्षेत्रों की शिक्षा पर किए जाने वाले पूँजी निवेश और खर्चे के बारे में सरकार पर संवैधानिक बाध्यता आवश्यक है।

वैसे भी प्रजातंत्र में प्राण फूंकने और उसे जीवित रखने के लिए वयस्क मतदान के अधिकार का उपयोग अधिकार के रूप में करना हो, तो उसके लिए कम से कम प्राथमिक शिक्षा का न्यूनतम आधार होना अपेक्षित है। यदि नहीं माना गया तो आज के प्रजातंत्र का स्वरूप अल्पतंत्रशाही जैसा दिखाई देता है। आगे चल कर उसका रूपांतरण तानाशाही, अराजकताप्रधान या दमन प्रणाली में होने की संभावना है जिसे टाला नहीं जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा के साथ ही व्यावसायिक, तकनीकी और कृषि विषयक शिक्षा के अधिकार को वैकल्पिक अधिकारों में से निकाल कर मौलिक अधिकारों की सूची में डालना आवश्यक है। उच्चतम न्यायालय ने चौदह वर्षों तक के बच्चों को मिलने वाली प्राथमिक शिक्षा को मौलिक अधिकार का जो स्तर प्रदान किया है, उसके भरोसे न रह कर संविधान में तद्नुकूल संशोधन किया जाना चाहिए। वैसा न होने पर शिक्षा के विषय में आज की सरकार की उदासीनता सतत चलती रहेगी और भविष्य में होने वाली अराजकता अटल बनी रहेगी। कोठारी कमीशन आयोग की सिफारिशों के अनुसार शिक्षा पर सरकारी खर्च राष्ट्रीय उत्पाद का कम से कम छ: प्रतिशत होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६/९२ के अनुसार सुधार तो हुए है लेकिन अगली कक्षाओं में जाते-जाते अधिकांश लड़के-लड़कियाँ पढ़ाई छोड़ देते हैं। शिक्षा के स्तर के विषय में तो कुछ न कहना ही उचित है। प्राचीन काल और इस्लामी परंपरा के अनुसार उच्च शिक्षा को अधिक महत्व देकर अंग्रेजों ने प्राथमिक और व्यावहारिक शिक्षा को दूसरे दर्जे का स्थान दिया था। वही गलती आज तक अनवरत जारी है।

जीवन-यापन का प्रामाणिक अधिकार: सामाजिक जीवन में हर व्यक्ति बेइमान है, इसको ध्यान में रख कर हर नियम और कानून बनाये गये हैं। आम आदमी सच्चा एवं सरल होता है, ऐसा मान कर यदि कानून और नियम बनाये गये होते तो वह जो कुछ कहता है या जैसा व्यवहार वह करता है उसे गलत प्रमाणित करने का उत्तरदायित्व प्रतिपक्ष या सरकारी अधिकारियों पर थोपा गया होता। तो उचित होता। पर ऐसा नहीं है। नागरिक जो कुछ कह रहा है, उसे सत्य प्रमाणित करने का दायित्व भी नागरिक पर ही है। नागरिक ने असत्य कहा है यह प्रमाणित हो जाता है तो उसे सजा मिलती है। किंतु सरकारी अधिकारी असत्य व्यवहार करता है, यह ऐसा सिद्ध हो जाए तो तब भी उसके लिए किसी भी प्रकार की सजा का प्रावधान नहीं है। नागरिक यदि सत्यनिष्ठ और ईमानदार है तो उसके प्रतिज्ञा युक्त दिए आवेदन पत्र की जाँच होनी चाहिए और जाँच अधिकारी पर वह वैसा है, नहीं सिद्ध करने के लिए उत्तरदायी ठहराया जाए। दोनों में से जो कोई झूठा साबित हो उसके लिए समान सजा का प्रावधान होना चाहिये। आर्थिक क्षेत्र के कानून और नियम ऐसे बनाए गए हैं कि उस में साधारणतया अधिकांश नागरिकों के लिए ईमानदारी से जीना असंभव हो जाता है।

इस नियम से गड़बड़ी कम होगी और भ्रष्टाचार उन्मूलन में सहायता मिलेगी। इससे सज्जनशक्ति की सुरक्षा और आत्मविश्वास बढ़ेगा। उसके लिए स्वस्थ्य, स्वच्छ एवं सुन्दर वातावरण निर्मित होगा। किसी को रिश्वत देने के लिए विवश करने की संभावना नहीं रहेगी। सज्जन शक्तिशाली बनेंगे। समाज में सांमजस्य बढ़ेगा, जिससे शांति स्थापित होगी। एक दूसरे के प्रति विश्वास का वातावरण निर्मित होगा। सच्चे अर्थों में समाज सशक्त और गौरवशाली होगा।

क्रमश:

''मैं भी छू सकती हूँ आकाश... मौके की है मुझे तलाश!!!'' - महिलाओं ने हासिल किया पुरस्कार

कहने जैसा...

समानता आधारित समुदाय स्थापित करने के लिए आवश्यक है समुदाय के हर एक वर्ग को आगे बढ़ने का मौका मिले। साथ ही साथ महिला और पुरुष दोनों की गरिमा का सम्मान हो। जब आर्थिक रूप से सक्षमता निर्माण होती है तब समानता आधारित स्थिति को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकते है। फाउण्डेशन के द्वारा कार्यरत बा-बापू १५० के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता की कोशिश हो रही है। इस प्रयास में महाराष्ट्र प्रशासन की ओर से भी हाथ बढ़ाया जा रहा है। ग्रामीण इलाकों में आर्थिक गतिविधियों के साथ जुड़ी महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए महाराष्ट्र प्रशासन के द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। हिरकणी नवउद्योजक राज्य स्तरीय स्पर्धा के अंतर्गत तहसील स्तर पर महिलाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस स्पर्धा अंतर्गत वर्ष २०१८-१९ के लिए जलगाँव जिला के खर्ची बुद्रुक गाँव के क्रांति स्वयं सहायता महिला बचत गुट ने प्रथम क्रमांक प्राप्त किया है। इस गुट को फाउण्डेशन के द्वारा करीब डेढ़ साल पहले तैयार किया गया था। क्रांति स्वयं सहायता गुट ने फाउण्डेशन के मागदर्शन में मशरूम खेती प्रकल्प को आगे बढ़ाया है। प्रकल्प की सफलता तथा गुट के अच्छे व्यवस्थापन के अंतर्गत महाराष्ट्र प्रशासन ने इस गुट को हिरकणी नवउद्योजक राज्य स्तरीय स्पर्धा के अंतर्गत चयन किया गया था। इस स्पर्धा में क्रांति स्वयंसहायता गुट में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन प्राप्त करते हुए प्रथम क्रमांक प्राप्त किया। इस गुट को तहसीलदार अर्चना खेतमाली और क्लस्टर विकास अधिकारी द्वारा पचास हजार रुपए तथा पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार समारंभ में गुट की अध्यक्षा अलकाबाई माळी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का मार्गदर्शन तथा गुट का कठोर परिश्रम उपयोग में आया। गुट के विकास के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता हमेशा मार्गदर्शन के लिए तैयार रहते है।

समग्र ग्राम विकास की विभावना को सार्थक करने के लिए इस तरह की सफलता ग्रामीण महिलाओं में उत्साह की नई लहर फैलाती है। क्रांति स्वयं सहायता गुट की सफलता से कई महिला समूहों को प्रेरणा प्राप्त हो रही है। ऐसे कई प्रयासों से बा-बापू १५० के अंतर्गत गाँधीजी प्रेरित समाज निर्माण की दिशा में आगे बढ़ते हुए समग्र ग्राम विकास की संकल्पना को सार्थक करने का प्रयास फाउण्डेशन के द्वारा किया जा रहा है। ♦♦♦

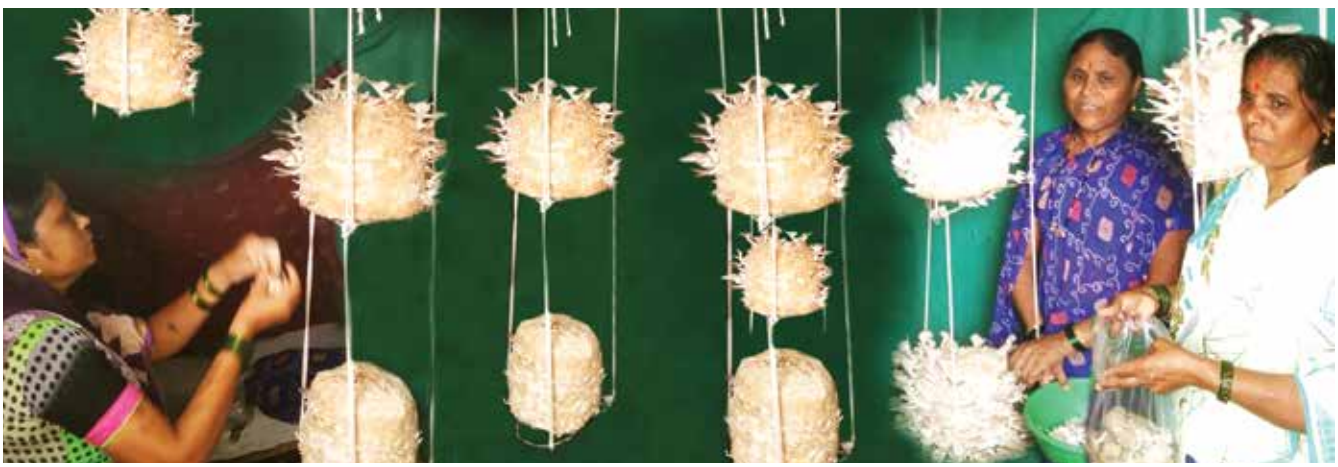

मशरूम उत्पादन में व्यस्त महिलाएं

युवाओं के हौसलों को सलाम

राहत कार्य में व्यस्त फाउण्डेशन का छात्र समूह

बाढ़ की स्थिति में अपने कार्य के द्वारा लोगों को प्रेरित करते कार्यकर्ता

इस वर्ष २०१९ में अगस्त महीने में महाराष्ट्र के पश्चिम क्षेत्र सांगली, कोल्हापूर जिलो में ज्यादा वर्षा के कारण कृष्णा और कोयना आदि नदियों में बाढ़ आने की वजह से इन इलाका में जन जीवन अस्तव्यस्त हो गया था। इस बाढ़ से दोनों जिलों के कई गाँवों में बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ है। मकान, खेती की फसले, पशु, और रोजी रोटी की बहुत सारी चीजों का नुकसान हुआ है। इन क्षेत्रों कि मदद के लिए दूर-दूर से हाथ बढ़ने लगे, युवा कार्यकर्ता की चेतना ऐसे समय पर जाग्रत रहे बगैर कैसे रह सकती हैं?

फाउण्डेशन में कार्यरत पी. जी. डिप्लोमा के छात्र इस बाढ़ की स्थिति से काफी चिंतित हो गए। हम अगर ऐसी स्थिति में लोगों को मदद कर सकते हैं तो हम जो सीखें है वह सार्थक है। इस दृढ़ निश्चय के साथ पी.जी. डिप्लोमा का छात्र समूह १२ अगस्त २०१९ को बाढ़ ग्रस्त इलाकों में लोगों की मदद के लिए पहुँच गया। २० अगस्त तक वे इस कार्य के साथ जुड़े रहे। शिक्षा, स्वच्छता और आरोग्य विषयक विभिन्न क्रिया कलाप के द्वारा प्रभावित जन जीवन को साधारण जीवन प्राप्त करने में इन छात्रों ने खुद को झोंक दिया।

अपनी परवाह न करते हुए अदम्य इच्छा शक्ति के आधार पर इस असाधारण कार्य के साथ जुड़े छात्रों में गोपाल, चंद्रशेखर, स्मिता, आकिब, जिश्नु, विकेश, प्रितम, प्रणय और फाउण्डेशन के कार्यकर्ता गणेश चाफेकर सम्मिलित थे। फाउण्डेशन इस युवा कार्यकर्ताओं को उनके हौसलों को सलाम करता है। ♦♦♦

आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रशिक्षण के द्वारा एक प्रयास

प्रशिक्षण के द्वारा आत्मविश्वास प्राप्तकर महिलाएं आगे बढने को तैयार

किसी भी क्षेत्र में आगे बढने के लिए आवश्यक है कि उस क्षेत्र को अच्छी तरह से जान ले। और किसी भी क्षेत्र को जानने के लिए प्रशिक्षण एक अच्छा माध्यम है। ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए हम नए क्षेत्रों को हासिल करें। फाउण्डेशन द्वारा ग्रामीण भागो में महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के प्रयास में प्रशिक्षण का आधार लिया जा रहा है। जलगाँव जिला के चोपडा तहसील में स्थित वैजापूर गाँव का ओम साईं महिला बचत गुट तथा खर्ची बुद्रुक गाँव का क्रांति महिला बचत गुट को मशरूम प्रशिक्षण के लिए पुना भेजा गया था। महाराष्ट्र राज्य कृषि विभाग की ओर से कृषि विद्यालय पुना में एक दिन का मशरूम खेती प्रशिक्षण प्रदान किया गया। दोनों गुट के तीन-तीन महिलाएं, फाउण्डेशन के कार्यकर्ता प्रशांत सूर्यवंशी और चंद्रकांत चौधरी इस प्रशिक्षण कार्य में सहभागी हुए थे। इस प्रशिक्षण में मशरूम बीज निर्माण प्रक्रिया, थैलियाँ भरना और मशरूम तैयार होने के बाद कब और कैसे निकालना इस विषय में विस्तृत चर्चा और प्रात्यक्षीकरण किया गया।

प्रशिक्षण सफलता से पूर्ण करने के बाद सभी प्रशिक्षार्थी को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण से इस गुट की महिलाओं को मशरूम उत्पादन तथा इससे संबंधित उद्योग चलाने की आदत में अमूल परिवर्तन आयेगा साथ ही साथ विपणन के क्षेत्र की संभावना को विस्तृत किया जाएगा।

गाँधी विचार आधारित समाज स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि महिला और पुरुष दोनों के हाथों में समान अधिकार प्राप्त हो। फाउण्डेशन द्वारा इस दिशा में आगे बढ़ते हुए महिलाओं को आर्थीक गतिविधियों के साथ जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। ♦♦♦

जल संधारण कार्य की फलश्रुति तालाब भर गए साथ ही लोगों के चहेरे पर हंसी भी - जल पूजन में उपस्थित अंबिका जैन, डेविड जेबराज, विनोद रापतवार अन्य कार्यकर्ता तथा ग्रामस्थ

जल व्यवस्थापन क्षेत्र का निर्माण

वर्तमान में पिछली १०-१५ वर्षों से जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा, ठंड, गर्मी की स्थिति बहुत ही असंतुलित हो रही है। जहाँ बारिश हो रही है वहाँ अत्यधिक हो रही है, और कई क्षेत्र ऐसे भी है जहाँ अकाल की स्थिति निर्माण हो रही है। यह स्थिति एक गंभीर समस्या का रूप धारण कर रही है। पिछले एक दशक के दौरान देखने से पता चलता है कि बाढ़ और अकाल की विरोधाभास स्थिति में काफी इजाफा हुआ है। इस स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव कृषि पर पड़ा है, बाढ़ और अकाल यह दोनों स्थिति कृषि के लिए खतरा है। ऐसी स्थिति से कृषि उत्पादन की मात्रा में काफी बदलाव आया है। नतीजा यह हुआ कि कई किसान कृषि को छोड़कर शहर में अपने लिए आजीविका के माध्यम खोज ने लगे। अगर ऐसी स्थिति बनी रही तो राष्ट्रीय खाद्य संकट निर्माण होना स्वाभाविक हो सकता है।

उपरोक्त स्थिति को टालने के लिए स्थानीय स्तर पर नियोजन की आवश्यकता है। स्थानीय लोगों की भागीदारी द्वारा नवनिर्मित तंत्रज्ञान के जरिए कृषि के लिए आवश्यक पानी का इस्तेमाल करना चाहिए। इस स्थिति में दो तरह का फायदा होता है,

१. पीने के लिए आवश्यक पानी की आपूर्ति।

२. कृषि के लिए पर्याप्त पानी प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसा नियोजन करने से अकाल की स्थिति में पीने के लिए पानी तथा कृषि के लिए संकट की स्थिति निर्माण नहीं होगी। ऐसी ही एक संकल्पना के आधार पर फाउण्डेशन ने जलगाँव जिला के चोपड़ा तहसील के वैजापुर, शेणपानी और बोरअजंटी गाँवों में जल संरक्षण क्षेत्र निर्माण किए गए। सबसे पहले इन गाँवों के ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों से चर्चा कर जल संधारण क्षेत्र निर्माण की जगह तय की गई। लोगों के साथ सामूहिक चर्चा से भागीदारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया और फाउण्डेशन ने अपना योगदान देते हुए साधन सामग्री जुटाए। नतीजा यह प्राप्त हुआ की आदर्श कहे जाने वाले जल संधारण क्षेत्र का निर्माण किया गया। इसमें किए गए कार्य के बारे में हमने अगस्त महीने के अंक में विस्तृत विवरण प्रकाशित किया है।

इस साल अच्छी बारिश होने की वजह से निर्मित सभी जल स्रोत में अच्छी मात्रा में पानी जमा हुआ है। लोक भागीदारी तथा फाउण्डेशन की मेहनत से निर्मित इस जल क्षेत्र का हस्तांतरण कार्यक्रम २१ अगस्त २०१९ के दिन रखा गया था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में फाउण्डेशन से अंबिका जैन उपस्थित थी, अपने करकमलों के द्वारा अंबिका जी ने इस जल क्षेत्रों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्थानीय लोग उपस्थित रहे। सबसे अच्छी बात यह रही कि जल क्षेत्र निर्माण में स्थानीय महिलाओं की भूमिका सराहनीय रही है। उद्घाटन कार्यक्रम में भी इन तीनों गाँव की महिलाओं के बचत गुट उपस्थित थे, इन लोगों ने फाउण्डेशन के कार्य की सराहना की और फाउण्डेशन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त किया।

फाउण्डेशन के कार्यकर्ता डेविड जेबराज, जैन इरिगेशन के विनोद रापतवार तथा बा-बापू १५० कार्य के साथ जुड़े ग्रामीण कार्यकर्ता उपस्थित थे। ♦♦♦

फाउण्डेशन द्वारा किए गए कार्य का नजारा

The Keynote speaker, Mr. Ramachandra Guha, at the inaugural function with the dignitaries of the National Seminar (L to R): Prof. Mahendra P. Singh, Prof. Sudhir Chandra, Mr. Ashok B. Jain, Dr. Sudarshan Iyengar, Prof. Gita Dharampal.

NATIONAL SEMINAR ON "HOW GANDHI MATTERS"

गाँधीजी की १५०वीं जन्म जयंती के अवसर पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया था। इस सेमिनार के उद्घाटन सत्र में सुप्रसिद्ध इतिहासकार रामचंद्र गुहा उपस्थित थे। इस सेमिनार में देश के विभिन्न प्रांतों से आए विद्वानों के द्वारा करीब २४ शोध पेपर प्रस्तुत किए गए। इसमें मुख्य रूप से प्रो. रामचंद्र प्रधान, दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉ. सविता सिंघ, डॉ. अनंदा गिरी ने अपने शोध पेपर प्रस्तुत किए थे। सेमिनार में विशेष रूप से सुदर्शन आयंगार, कॅलिफोर्निया से पधारे प्रो. पुरुषोत्तम बिलीमोरिया ने खास प्रस्तुति के द्वारा वर्तमान परिस्थिति में गाँधी कैसे मायने रखते इस विषय पर प्रकाश डाला। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय इतिहासकार तथा लेखक सुधीर चंद्र उपस्थित थे। बा-बापू १५० के अंतर्गत विशेष रूप से आयोजित इस सेमिनार की अधिकतर प्रस्तुति अंग्रेजी में रही है, इस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी हमारे स्नेही पाठकों के लिए अंग्रेजी में साझा कर रहे हैं। **– संपादक**

As part of the celebration of the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi, a two-day seminar on 'How Gandhi Matters', was held at the beautiful arcadian idyll of Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon. It was organized jointly by the Gandhi Research Foundation (GRF), Jalgaon and the Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla, on August 23-24, 2019.

The seminar that aimed at assessing the relevance of Gandhian solutions for India and the world in the 21st Century, was attended by senior scholars on Gandhi from leading institutions across the country.

The Seminar was inaugurated in the august presence of renowned historian and writer Ramchandra Guha, Ashok Jain, Director, GRF and Chairman, JISL, Sudarshan Iyengar, Director, GRF., and. In his inaugural address Guha placed four arguments to elucidate the unique contribution of Gandhiji to the civilization. Gandhi's

The ceremonial lighting of the lamp

Ramchandra Guha being felicitated by Ashok Jain

Dr. Sudarshan Iyengar introducing the National Seminar

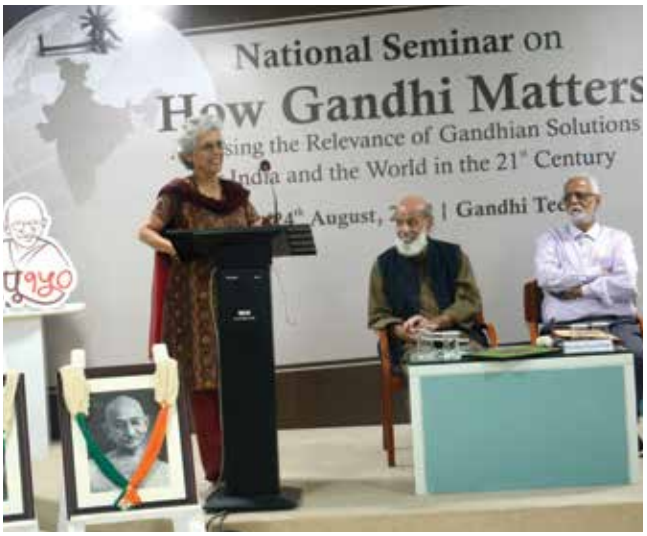

Prof. Gita Dharampal concluding the National Seminar

application of nonviolence in the realm of politics and economics, his interfaith prayer as an effective tool for the unity of a diverse country like India, he proposed, have no parallel as they have evoked the conscience of the people of the world.

Noted scholars including Sudhir Chandra (Indian historian and author), Purushottama Bilimoria (research fellow, Berkeley, California), Ramchandra Pradhan, (writer and retired Professor Delhi University), Dr. Savita Singh (Delhi University) and Ananda Giri (Scholar, Chennai) were part of the Seminar. The sessions were devoted to deliberate on Mahatma Gandhi's historic contribution, and how the contemporary world needs Gandhi more urgently than ever before, and urged the audience to be aware of its responsibility in helping the world in translating Gandhi's message of nonviolence into systemic action. Contrastively, through his historically oriented power-point, Purushottama Bilimoria demonstrated the wider and deeper influence of Gandhi's strategies for nonviolent protests and struggle for rights, justice and solidarity in the American Civil Rights movement. All these cutting-edge presentations were enthusiastically received and discussed by a large audience of students, researchers and Gandhian scholars.

The two-day national seminar was divided into 6 thematic sessions (dealing with Gandhi's historical contribution, his concepts of swaraj, sarvadharma samabhava, satyagraha, his implementation of economic and ecological sustainability, as well as his ambivalent relationship with science and modernity) and comprised 24 short papers by the above stated scholars as well as researchers like Satish Kumar Jha, Pranav Kumar Vashishta, Himanshu Roy and J.N. Sinha. In discussing the debates and controversies surrounding Gandhi's extraordinary contribution, their collective aim was to assess and 'reinvent' Gandhian solutions (in nonviolence, moral politics, societal reform, economic and ecological sustainability, and interreligious harmony) to contemporary problems confronting India and the world. It was underscored how Gandhi's valiant endeavours could serve us as crucial 'signposts' indicating a road-map towards a Sarvodaya social order for the creation of a viable future, and thereby to highlight "How Gandhi Matters Today".

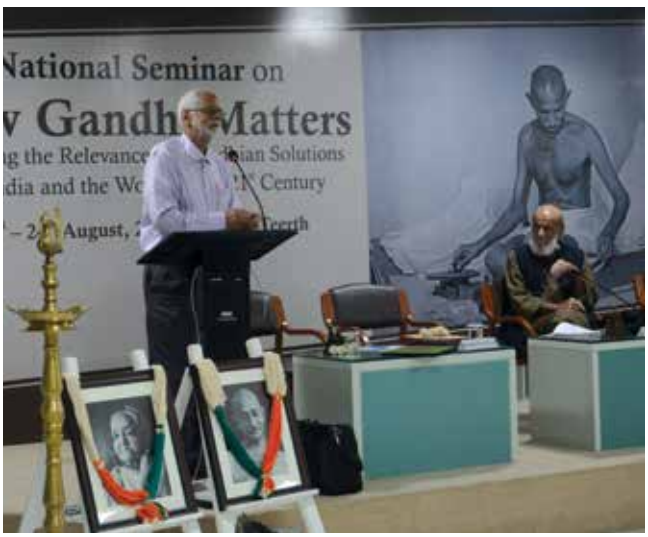

Prof. M.P. Singh introducing the valedictory speaker

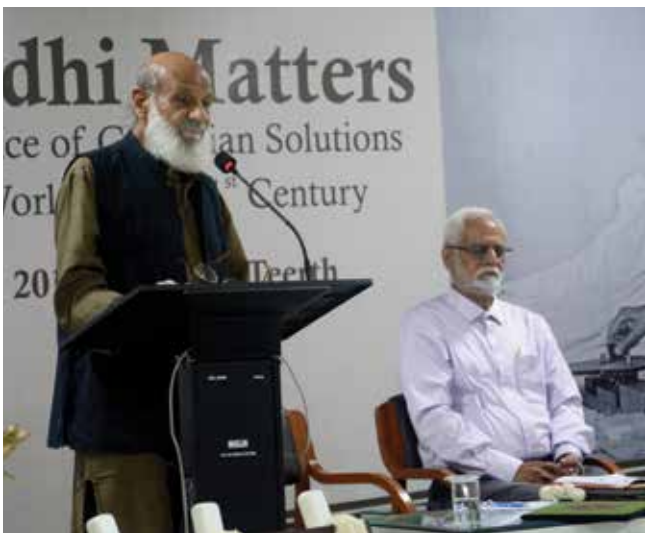

Prof. Sudhir Chandra giving the valedictory address

Group photo of the National Seminar participants and organizers outside the venue with Prof. Gita Dharampal (convenor) and Prof. M.P. Singh (co-convenor) in the second row, centre.

The successful realization of this academic event was made possible thanks to the convenor of the Seminar Prof. Gita Dharampal, Dean of Research, the GRF., the co-convenor Prof. M P Singh of the IIAS, and Ms. Vidya Krishnamurthi (research co-ordinator, GRF), who coordinated the event. ♦♦♦

Enthusiastic response from the participating audience

बा–बापू १५० में होंगे स्वस्थ समाज की रचना

दंत चिकित्सा का महत्व साझा करते हुए चिकित्सक समूह

स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है समाज में से असामाजिक आदतों को दूर किया जाए। वर्तमान पीढ़ी कई सारे मानसिक दबाव में जी रही है, कई बार ऐसा होता है कि मानसिक दबाव को कम करने के लिए गलत रास्ते पकड़ लेते हैं, ऐसी स्थिति में युवा व्यसन का सहारा लेते है। वर्तमान समय में ग्रामीण इलाकों में तंबाकू जैसे व्यसन की असर युवाओं पर अधिक मात्रा में छाई हुई है। वैसे व्यसन की तरफदारी किसी भी महानुभाव ने नहीं की है, टॉल्सटॉय ने तो इसे पागलपन कहा है।

व्यसन को रोकने का प्रभावकारी माध्यम यह है कि बाल्यावस्था में इसके प्रति जागरूकता फैलाई जाए। बा–बापू १५० के अंतर्गत स्वस्थ समाज की दिशा में आगे बढ़ते हुए फाउण्डेशन द्वारा व्यसन मुक्त समाज निर्माण करने की दिशा में पहल की जा रही है। फाउण्डेशन, राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम तथा जिला परिषद प्राथमिक शिक्षा विभाग तथा इंडियन डेंटल एसोसिएशन जलगाँव के संयुक्त उपक्रम से जलगाँव जिला के करीब नौ गाँवों में कार्यक्रम किए गए। मुख्य रूप से विद्यालय, युवा समूहों, वाचनालय, इन जगहों से इस प्रयास को आरंभ कर एक नई पहल जगाने का प्रयास किया गया। इस कार्यक्रम में व्यसन के प्रति जन जागृति तथा मौखिक स्वास्थ्य जांच शिविर को अंजाम दिया गया। इस श्रृंखला का पहला कार्यक्रम २० से २३ अगस्त के दौरान जलगाँव जिला के कुर्हाडदा, रामदेववाडी, जलके तथा वैजनाथ में आयोजित किया गया। २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक आयोजित कार्यक्रम में वसंतवाडी, टाकरखेडा, शेरी, दापोरा तथा वावडदा गाँवों को सम्मिलित कर करीब एक हजार छात्रों के मौखिक आरोग्य की जांच की गई है।

इस कार्यक्रम में लोगों का सहयोग अधिक मात्रा में प्राप्त हुआ। इंडियन डेन्टल एसोसिएशन के डॉ. शीतल मंडोरा तथा फाउण्डेशन की ओर से डेविड जेबराज, सुधीर पाटील, चेतन पाटील तथा ग्रामीण कार्यकर्ताओं ने योगदान प्रदान किया। ♦♦♦

संग्रहालय के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय देखने आए हुए अतिथियों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ अभिमत **– संपादक**

यह संग्रहालय बड़ी दमक और संवेदना से बनाया गया है। देखनेवालों की बुद्धी पर चोट करेगा, उन्हें सोचने को विवश करेगा कि गाँधी क्या हैं, उन्होंने हमारे लिए क्या किया और जब कि वह नहीं हैं हमें क्या करना चाहिए।

सुधीर चंद्र, *नई दिल्ली*

.....

यह संग्रहालय गाँधीजी के जीवन को प्रत्यक्षदर्शी बनाने में सहयोग प्रदान करता है। उनका जीवन ही संदेश है, उस संदेश तक पहुँचने और समझने में सहायक सिद्ध हो रहा है। यह आधुनिकता पूर्ण किंतु गाँधीजी के जीवन को प्रस्तुत कर रहा है।

डॉ. तेजराम पाल, *व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपूर, म. प्र.*

.....

अद्‌भूत। भविष्य के लिए इतिहास का वर्णन महात्मा गाँधी के दर्शन का प्रभावपूर्ण चित्रण व प्रदर्शन। आनेवाली पीढ़ियों के लिए उत्तम धरोहर।

अमरीश शर्मा, *डिपार्टमेंट ऑफ कस्टम, नई दिल्ली*

यह एक बेहतर रास्ता है दुनिया और देश के लोगों को कम समय में गाँधी के बारे में बताने का और उनके विचारों को फैलाने का। आज के समय में जब अहिंसा बढ़ रही है धर्मो और जातियों के बीच तो यह ज्यादा जरुरी हो गया है कि गाँधीजी के विचारों को समझने का इस तरह के संग्रहालय भारत में और भी स्थापित होने चाहिए।

जय हिंद।

राज के. मौर्या,
यूनिवर्सिटी ऑफ अर्जुनपूर, जबलपूर, उत्तर प्रदेश

.....

A most educative experience for me, a well designed and thoughtfully laid out museum. I am glad so many school children visit most regularly.

With best wishes,

Ramachandra Guha,
Historian and Writer, Bangolore

.....

It was a pleasure for us to see this awesome museum. We got inspired to think way more about mankind and our responsibility for the next generations, wildlife & nature.

Lothar Mair, Markus Laube,
Maitec, Austria / Germany

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

फ्रेड मोसौम, अभियंता, जैन इरिगेशन, कॅलिफोर्निया
०२.०८.२०१९

कझूमि ओशिमा, सहायक प्रबंधक, एजीसी इन्जिनियरिंग कं. ली. जापान – ०४.०८.२०१९

नितीन करीर, सचिव, महाराष्ट्र प्रशासन, मुंबई
०९.०८.२०१९

आय आर एस ऑफिसर बॅच – २०१९, नागपूर
११.०८.२०१९

रामचंद्र गुहा, इतिहासकार, नई दिल्ली
२३.०८.२०१९

डॉ. सदानंद मोरे, अध्यक्ष, मराठी साहित्य मंडल, पुना
१९.०८.२०१९

डॉ. आनंद नाडकर्णी, गाँधी अभ्यासक, पुना
२४.०८.२०१९

प्रो. पुरुषोत्तम बिलीमोरिया, बर्केली यूनिवर्सिटी, युएसए
२५.०८.२०१९

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–२९

हरिजन

महात्मा गाँधी हरिजन दौरे के दौरान एक सार्वजनिक सभा में, पश्चिम बंगाल, १९३४।

महात्मा गाँधी एक हरिजन जोड़े के विवाह समारोह, में सेवाग्राम १९४०।

महात्मा गाँधी और कस्तूरबा, भावनगर में हरिजन बच्चों के साथ, जुलाई १९३४।

विनोबा यहाँ तुम लोगों की सेवा के लिए आये हो। यहाँ हमेशा आश्रम का कार्यक्रम चलता है। आशा है, कि तुम उसका पूरा लाभ उठाओगे। सेठजी ने अभी-अभी याद दिलाया है कि यहाँ एक बैल मर गया था, उसे कोई उठाने को तैयार नहीं था। उसे आश्रम के लोगों ने उठाया और गाड़ दिया। हरिजन भाइयों को यह बात नहीं लगी, क्योंकि अस्पृश्यों में भी अस्पृश्यतम लोग है, उनका यह कार्य दूसरे कैसे करें। ऐसा वे लोग मानते हैं। विनोबा ने शास्त्रों का पठन-पाठन किया है, उनका अभ्यास किया है। वे कहते हैं कि भगवान ने कहीं भी यह नहीं बताया है कि कोई उच्च है और कोई नीच है, कोई स्पृश्य है और कोई अस्पृश्य है।

– महात्मा गाँधी

Vinoba has come here to serve you. The Ashram programme is followed here regularly. I hope you will take full advantage of it. Shethji reminded me just now that no one was prepared to remove the carecass of a bullock, and so the Ashram inmates carried it and buried it. The Harijan friends were displeased by this, for they think that others should not do the work allotted to the lowest even among the untouchables. Vinoba has made a through study of the scriptures. He says that nowwhere has God enjoined that some are high and others are low, some touchable and some untouchable.

- Mahatma Gandhi

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:

Gandhi Research Foundation

Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए **खोज गाँधीजी की** यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)
प्रकाशन: २८ सितम्बर, २०१९